भूमिका

भारतीय साहित्य की उपन्यास विधा में 'मैला आंचल' और 'पीढ़ियाँ' (तमिल: तलैमुरैगक) कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टि से मील का पत्थर हैं। 'मैला आँचल' उपन्यास के लेखक हिन्दी के प्रसिद्ध कथाकार फणीश्वरनाथ रेणु हैं तथा 'पीढ़ियाँ' उपन्यास के लेखक आधुनिक तमिल साहित्य के सुपरिचित एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी नील पद्मनाभन हैं। दोनों ही रचनाकारों ने अपने रचनात्मक लेखन के द्वारा अपने-अपने समाज के यथार्थ को चित्रित किया है। दोनों ही उपन्यास अपनी-अपनी भाषा में प्रतिनिधि आंचलिक उपन्यास हैं। फणीश्वरनाथ रेणु 'मैला आँचल' में बिहार के पूर्णिया जिले की जनसंस्कृति को बड़े ही सजीव ढंग से प्रस्तुत करते हैं तो वहीं नील पद्मनाभन 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में कन्याकुमारी जिले के सात गाँव में बसे चेट्टी समुदाय की जीवन गाथा, वहां की रुढ़ियाँ तथा धार्मिक मान्यताओं को चित्रित करते हैं। अभी तक नील पद्मनाभन और फणीश्वरनाथ रेणु दोनों पर अलग-अलग शोध-प्रबंध तो लिखे गये हैं, लेकिन दोनों की शिखर कृतियों-'मैला आंचल' और 'पीढ़ियां' पर इस दृष्टि से अध्ययन नहीं किया गया है कि इन उपन्यासों में चित्रित आंचलिकता का कितना सफल प्रामाणिक चित्रण किया गया है। हिंदी में आंचलिकता की चर्चा फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 1954 से शुरू हुई। इसकी भूमिका में ही रेणु ने इसे आंचलिक उपन्यास कहा है। 'मैला आंचल' के प्रकाशित होते ही इसकी ख्याति जबरदस्त फैली तथा इसके अनुकरण पर हिंदी साहित्य में आंचलिकता का एक आंदोलन चल पड़ा। साहित्य में कोई भी प्रवृत्ति अकस्मात जन्म नहीं लेती है। रेणु से पूर्व भी आंचलिकता के बीज तत्त्व शिवपूजन सहाय की 'देहाती दुनिया' (1926) में स्पष्ट रूप से मिलते हैं। हिंदी में आंचलिक उपन्यासों के विकास की श्रृंखला स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के ही मिलती है। रेणु से कुछ ही पहले नागार्जुन भी मिथिलांचल पर आधारित उपन्यास 'बलचनमा' लिख चुके थे, लेकिन रेणु का 'मैला आंचल' आंचलिक उपन्यासों के एक मॉडल के रूप में साहित्य-जगत में आया, इसलिए आंचलिक उपन्यासों के उदय में रेणु का स्थान सर्वोच्च है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के लिए चयनित उपन्यासों का गहराई से अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का विषय 'हिंदी एवं तमिल आंचलिक उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन (विशेष संदर्भ- मैला आँचल एवं पीढ़ियाँ)' है। समूचा लघु शोध-प्रबंध तीन अध्याय में विभक्त किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रथम अध्याय 'आंचलिकता-: सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक पक्ष' है। इस अध्याय को तीन उप-अध्याय में विभाजित किया गया है जिसका प्रथम उप-अध्याय 'आंचलिकता का स्वरूप, अर्थ एवं विशेषताएँ' है। इस उप-अध्याय में आंचलिकता की अवधारणा को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है तथा विभिन्न विद्वानों द्वारा अंचल की परिभाषाओं को समन्वित रूप में समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही आंचलिक उपन्यासों का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। तीसरा उप-अध्याय 'आंचलिकता के तत्व' नाम से है। इस उप-अध्याय में आंचलिकता के उन तत्वों को चिन्हित किया गया है जिसके होने पर हम किसी कृति को आंचलिक कृति कहते हैं तथा उन तत्वों के न होने पर हम उस कृति को आंचलिक कृति नहीं मानते। चौथा उप-अध्याय 'आंचलिक उपन्यासों का विकास' नाम से है। इस उप-अध्याय में आंचलिक उपन्यासों की विकास प्रक्रिया में योगदान देने वाले आंचलिक कृतियों की चर्चा की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के दूसरे अध्याय का शीर्षक 'व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इस अध्याय को दो क्रमश: फणीश्वरनाथ रेणु-:व्यक्तित्व एवं कृतित्व, नील पद्मनाभन-: व्यक्तित्व एवं कृतित्व उप-अध्याय में विभक्त किया गया है। इन दोनों उप-अध्यायों में क्रमश: फणीश्वरनाथ रेणु और नील पद्मनाभन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में जन्म की कथा, नामकरण परिवार एवं उनकी प्रारम्भिक शिक्षा का विवरण देने के साथ-साथ उनके आस-पास के सामाजिक परिवेश का वर्णन किया गया है। लेखन का प्रारम्भ तथा उनकी रचनाओं की चर्चा भी इसमें की गई है, साथ ही उनके व्यक्तित्व के निर्माण की परिस्थितियों के योगदान को भी प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने अपनी रचनाओं में सामाजिक व राजनीतिक पृष्ठभूमि को दिखाया है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का तीसरा अध्याय 'मैला आँचल' और 'पीढ़ियाँ' उपन्यास का तुलनात्मक' है जिसे तीन उप-अध्याय में विभाजित किया गया है। जिसका पहला उप-अध्याय 'कथानक, रचनाकाल और परिवेश' नाम से है। इस उप-अध्याय में 'मैला आँचल' और 'पीढ़ियाँ' उपन्यास के कथानक के माध्यम से रचना में उपस्थित देशकाल-वातावरण तथा लेखक के परिवेश को जानने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय के दूसरे उप-अध्याय का शीर्षक 'स्त्रियों की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन' है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत 'मैला आँचल' एवं 'पीढ़ियाँ' उपन्यास में चित्रित स्त्रियों की स्थिति को वर्तमान स्त्री-विमर्श की अवधारणा से जोड़कर अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। दोनों उपन्यासों में स्त्री स्वर की अभिव्यक्ति का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है। स्त्री-जीवन की मुख्य समस्याओं

एवं स्त्री-समाज के यथार्थ का विवेचन किया गया है। तीसरा उप-अध्याय 'तत्कालीन परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन' नाम से है। इस उप-अध्याय में दोनों उपन्यासों में चित्रित विभिन्न परिस्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। दोनों उपन्यासों में उपस्थित अंधविश्वास, रूढ़ियों, अशिक्षा, शोषण के भिन्न-भिन्न रूपों आदि को तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है। अंत में प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध का उपसंहार तथा लघु शोध-प्रबंध में सहायक ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गई है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध को पूर्ण करवाने में जिन लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, मैं उनका सदैव आभारी रहूँगी। इस कार्य में सबसे पहले में अपने शोध-निर्देशक एवं विभागाध्यक्ष प्रो॰ कृष्ण कुमार सिंह सर का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जो लघु शोध-प्रबंध की परिकल्पना से लेकर समाप्ति तक अविराम सहयोग, उत्साहवर्धन करते रहें हैं, जिसका प्रतिफल यह लघु शोध-प्रबंध है। उनके प्रति अपनी कृतज्ञता को शब्दों में नहीं व्यक्त किया जा सकता। मैं उन सभी शिक्षकों के प्रति आभारी हूँ जिनसे निरंतर प्रेरणा,प्रोत्साहन और परामर्श मिलता रहा है।

मैं अपने पूज्य माता-पिता एवं सास-ससुर को कृतज्ञतापूर्वक याद करती हूँ जिन्होंने अपने वात्सल्य पूर्ण स्नेह से मुझे सदा प्रेरित किया एवं इस लायक बनाया कि मैं यह कार्य सम्पन्न कर सकी। मैं अपने पूरे परिवार के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जो मेरे संबल स्वरूप अपेक्षित सहयोग के लिए हमेशा तत्पर रहे। मित्रों का हमारे जीवन में विशेष जगह होता है। मित्र हमे कठिन समय में टूटने-बिखरने और निराश होने से बचाते हैं। मैं अपने ऐसे सभी मित्रों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने पूरे शोध कार्य के दौरान मुझे संबल प्रदान किया।